होम / होम
घोड़ों को बेदम करना, इसका अर्थ क्या है?

घोड़ों को बेदम करना

घोड़ों को बेदम करना, इसका अर्थ क्या है?

प्रश्न: मैं जानना चाहता हूँ कि घोड़ों को बेदम करने का अर्थ क्या है। क्यों भगवान ने कभी-कभी इस्राएलियों से आदेश दिया कि वे युद्ध में अपने दुश्मनों के घोड़ों को बेदम कर दें?

हम यह शब्द इस पद में पढ़ते हैं:

यहोशुआ 11:6 – “परमेश्वर ने यहोशुआ से कहा, ‘उनके लिए हाथ मत बढ़ाना; क्योंकि इस समय मैं उनके सारे सेना को इस्राएल के सामने मार डालूंगा; उनके घोड़ों को बेदम कर दो, और उनके रथों को आग लगा दो।’”

यहोशुआ 11:7-9 में लिखा है कि यहोशुआ और उसका युद्ध में सभी लोग तुरंत मरोमू के पास गए और दुश्मनों पर हमला किया। परमेश्वर ने उन्हें इस्राएलियों के हाथों सौंप दिया, और वे सभी शहरों तक उनका पीछा करते हुए विजय प्राप्त कर रहे। यहोशुआ ने परमेश्वर के आदेश के अनुसार उनके घोड़ों को बेदम

किया और उनके रथों को जला दिया।

जैसा कि हम जानते हैं, जब यहोशुआ और इस्राएली यार्डन नदी को पार कर कन्नान पहुंचे, तो उन्होंने अपने कई अनुभवी और विशाल शत्रुओं का सामना किया। उनमें से एक राजा ‘याबिन’ था, जिसने अकेले नहीं लड़ाई लड़ी, बल्कि अपने आसपास के अन्य राज्यों से मदद बुलाकर यहोशुआ और इस्राएलियों को हराने की कोशिश की। बाइबल में वर्णित है कि उनकी सेना समुद्र की रेत जैसी बहुत बड़ी थी, रथों और घोड़ों की संख्या भी बहुत थी।

लेकिन परमेश्वर ने यहोशुआ को आदेश दिया कि वे उनके घोड़ों और रथों को न लें, बल्कि उन घोड़ों को बेदम कर दें।

घोड़ों को बेदम करने का अर्थ क्या है?

“बेदम करना” का मतलब है पैरों की मांसपेशियों और नसों को क्षतिग्रस्त करना, जिससे व्यक्ति या जानवर चल नहीं पाए, दौड़ नहीं पाए, कूद नहीं पाए या चढ़ नहीं पाए। ये मांसपेशियाँ मनुष्य और जानवर दोनों के पीछे के पैरों में होती हैं।

यदि इन्हें काट दिया जाए तो ये कभी ठीक नहीं होतीं और व्यक्ति

या जानवर स्थायी रूप से विकलांग हो जाता है। इसलिए प्राचीन युद्ध की परंपरा में, अनावश्यक युद्धघोड़े छोड़ दिए नहीं जाते थे। उन्हें बेदम कर दिया जाता था ताकि वे दुश्मनों के हाथ न लगें और भविष्य में युद्ध में इस्तेमाल न हो सकें।

तो क्यों परमेश्वर ने इस्राएलियों को इन घोड़ों को लेने की अनुमति नहीं दी, बल्कि उन्हें बेदम करने का आदेश दिया?

क्योंकि परमेश्वर चाहता था कि उनका भरोसा केवल उसी पर हो, न कि हथियारों या सेनाओं पर। उन्हें यह समझाना था कि विजय केवल उसकी आत्मा से ही आती है।

जैसा कि दाऊद ने कहा:

भजन संहिता 20:7 – “वे घोड़े और रथों पर भरोसा करते हैं,
लेकिन हम यहोवा, हमारे परमेश्वर के नाम पर भरोसा करेंगे।”

इसलिए, जब इस्राएली यार्डन को पार कर रहे थे, तो उन्होंने न तो घोड़ों का, न रथों का उपयोग किया, लेकिन उनके आसपास के सभी शत्रु उनसे डरते थे। यह सिर्फ इसलिए संभव हुआ क्योंकि उनका भरोसा केवल परमेश्वर पर था।

हमारे लिए भी यही शिक्षा है: अगर हम शैतान या हमारे शत्रुओं पर पूरी तरह से विजय पाना चाहते हैं, तो हमें अपना भरोसा इंसानों, संपत्ति या किसी अन्य चीज़ पर नहीं रखना चाहिए। केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह पर भरोसा रखें, जो हमें बचा सकते हैं।

इस दौरान, हमें धर्म की सारी बली और कवच (इफिसियों 6) धारण करने की आवश्यकता है ताकि जब शैतान हम पर हमला करे, हम उसके पहले उसे बेदम कर सकें, यीशु के नाम में।

प्रभु आपका भला करे।

क्या आप तैयार हैं कि यीशु आज लौटें तो आप उसके साथ जाएँ?
क्या आप समझते हैं कि बाइबल में भविष्यवाणी की गई थी कि दो प्रकार के ईसाई होंगे? (मत 25) – बुद्धिमान और मूर्ख। दोनों का दावा होगा कि वे प्रभु की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन मूर्ख लोग भोज में शामिल नहीं हो पाए क्योंकि उनके दीपक में तेल पर्याप्त नहीं था।

तो यह समय केवल यह कहने के लिए कि आप ईसाई हैं या उद्धार पाए हैं,

पर्याप्त नहीं है। आपको यह सोचना होगा: “मुझमें कौन सा आत्मिक तेल है जो मुझे यह विश्वास देता है कि जब मसीह आएगा, मैं उसके साथ जाऊँगा?”

मारन अथ

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp